अथ प्रश्नोपनिषदि प्रथमप्रश्नः १ ॥

ॐ सुकेशा च भारद्वाजः,शैब्यश्च सत्यकामः,सौर्य्या-यणी च गार्ग्यः,कौशल्यश्चाश्वलायनो,भार्गवो वैदर्भिः, कबन्धी कात्यायनस्ते,हैते, ब्रह्मपरा ब्रह्मनिष्ठाः परंब्रह्मा-न्वेषमाणा एष ह वैतत्सर्व्वं वक्ष्यतीति ते ह समित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः ॥ १ ॥

प्रश्नोपनिषद् के प्रथमप्रश्नकी भाषाटीका का प्रारम्भ ।

श्रीगुरुरुवाच । हे सौम्य ! हे प्रियदर्शन ! अब साव-धान होके प्रश्न उपनिषद्कोभी श्रवण करो'सुकेशा च भारद्वाजः' <भरद्वाज का पुत्र सुकेशा> नामवाला मुनि । और ' शैब्यश्च सत्यकामः ' < शिबि ऋषिका पुत्र सत्यकाम> नामवाला मुनि । और ' सौर्य्यायणी च गार्ग्यः ' < सूर्य्यके पुत्र सौर्यमुनि तिसका पुत्र सौर्य्यायणी सो गर्गगोत्र बिषे उत्पन्नभया ताते गार्ग्य> नाम वाला मुनि । और ' कौशल्यश्चाश्वलायनः ' <अश्वलऋषि का पुत्र कौशल्य > नामवाला मुनि । और ' भार्गवो वैदर्भिः ' < वि-दर्भदेशका रहनेवाला भृगुके गोत्र बिषे उत्पन्न भया इससे भार्गव> नामवाला मुनि । और ' कबन्धी कात्यायनः ' < कत्यके पुत्र कात्यायन ऋषिरूप प्रपितामह (परदादे) वाला कबन्धी नाम-क> मुनि ' ते हैते ' < यह विख्यात > छः मुनीश्वर सो ' ब्रह्म-पराः ' <ब्रह्मपर> अर्थात् अपरब्रह्म (प्राणोपासना) के लिये तत्पर होने करके प्राप्तभये हैं इससे ब्रह्मपर हैं । अथवा अपरब्रह्म जे छहों अंगों सहित ऋगादि वेदरूप अपराविद्या तिसबिषे निष्णात भये ताते ब्रह्मपर हैं । और ऽ ' ब्रह्मनिष्ठाः ' < ब्रह्मनिष्ठ हैं >

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/atharvavediyaprasnopanisad1921/0009
gefördert durch die DFG